VISHVA–JYOTI

REGD NO. PB-HSP-01
(1.1.2021 TO 31.12.2023)
R.N. No. 1/57

ISSN 0505-7523

मासिक पत्रिका (JOURNAL)

विश्वज्योति

(PEER REVIEWED JOURNAL)

(अभिनिर्देशित मासिक पत्रिका)

71वां वर्ष, 11 अंक, फरवरी 2023 ई०

संचालक–सम्पादक
प्रो. इन्द्रदत्त उनियाल

सह–सम्पादक
डॉ. देवराज शर्मा

प्रकाशन स्थान
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान
साधु आश्रम, होश्यारपुर–146021 (पंजाब, भारत)

ISSN 0505-7523

प्रकाशक

विश्वेश्वरानन्द–वैदिक–शोध–संस्थान

साधु आश्रम, होश्यारपुर–146021 (पंजाब, भारत)

(अभिनिर्देशित पत्रिका)

(PEER REVIEWED JOURNAL)

प्रकाशन–परामर्शदात्री समिति :

डॉ. दर्शन सिंह निर्वैर, आजीवन सदस्य, वि.वै. शोध संस्थान कार्यकारिणी समिति, साधु आश्रम, होश्यारपुर.

डॉ. (श्रीमती) कमल आनन्द, आदरी प्रोफैसर (वि.वै. शोध संस्थान, होश्यारपुर), 1581, पुष्पक कम्पलैक्स, सैक्टर 49–बी, चण्डीगढ़.

डॉ. जयप्रकाश शर्मा, 1486, पुष्पक कम्पलैक्स, सैक्टर 49–बी, चण्डीगढ़.

प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल, आदरी प्रोफैसर (वि.वै. शोध संस्थान, होश्यारपुर), एफ–13, पंचशील इन्कलेव, जीरकपुर (मोहाली) पंजाब.

प्रि. उमेश चन्द्र शर्मा, पी.ई.एस.(I) रिटा0, शिवशक्ति नगर, होश्यारपुर.

प्रो. (सुश्री) रेणू कपिला, कोठी नं. बी–7 / 309, डी.सी. लिंक रोड, होशियारपुर (पंजाब).

डॉ. डी. रामकृष्णन, 301, वरुण एनक्लेव, एन.आर.पी. रोड, गाँधी नगर, विजयवाड़ा,

आन्ध्रा प्रदेश-520 003

डॉ. नरसिंह चरणपंडा, वी.वी.बी.आई.एस.एण्ड आई.एस.(पं.वि.पटल), साधु आश्रम, होशियारपुर.

प्रो. (डा.) ऋतुबाला, वी.वी.बी. संस्कृत एवं भारतभारती अनुशीलन संस्थान (पंजाब विश्वविद्यालय पटल), साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब).

दूरभाष : कार्यालय : 01882 – 223582, 223606

संचालक (निवास) : 01882–244750

E-mail : vvrinstitute@gmail.com

vvr_institute@yahoo.co.in

Website : www.vvrinstitute.com

मुद्रक : विश्वेश्वरानन्द वैदिक–शोध–संस्थान प्रैस, होश्यारपुर (पंजाब)

निर्णायकमण्डल सदस्य (Review Committee)

- प्रो. रघवीर सिंह, आदरी प्रोफैसर, वी.वी.आर.आई., साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब).
- प्रो. ललित प्रसाद गौड, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा).
- प्रो. मुकेश कुमार अरोड़ा, हिन्दी विभाग, गवर्नमेंट कालेज, लुधियाना (पंजाब).
- प्रो. (डा.). सुधांशु कुमार षडंगी, वी.वी.बी. संस्कृत एवं भारतभारती अनुशीलन संस्थान (पंजाब विश्वविद्यालय पटल), साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब).
- प्रो. (डा.). ऋतुबाला, वी.वी.बी. संस्कृत एवं भारतभारती अनुशीलन संस्थान (पंजाब विश्वविद्यालय पटल), साधु आश्रम, होश्यारपुर (पंजाब).

ISSN 0505-7523

भारत में एक प्रति का मूल्य : १० रुपये.
विदेश में एक प्रति का मूल्य : ३ डालर.

प्रकाशन विषयक विशिष्ट नियम

१ विश्वज्योति अभिनिर्देशित पत्रिका **(Peer Reviewed Journal)** विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाती है।

२ पत्रिका **(JOURNAL)** प्रत्येक मास की २८ तारीख को (अनिवार्य रूप से) प्रकाशित होती है।

३ इसका प्रकाशन वर्ष अप्रैल मास से प्रारम्भ होता है।

४ इसके अप्रैल-मई एवं जून-जुलाई के दो वार्षिक विशेषांक प्रकाशित होते हैं।

५ भविष्य में जो भी प्राध्यापक अथवा शोध-छात्र पदोन्नति या यत्र-तत्र नियुक्तिहेतु विश्वज्योति में लेख को छपवाना चाहते हैं, वे कम से कम ५ पृष्ठ का अथवा अधिक से अधिक ७ पृष्ठ तक का सटिप्पण अपना लेख भेजें, टिप्पण नीचे या लेख के अन्त में दे सकते हैं। ऐसे लेखों पर ही (Peer Reviewed Journal) का ISSN नम्बर छापा जायेगा।

विशेष: स्वतन्त्र रूप से लेख भेजने वाले विद्वान् लेखकों के लिए यह बन्धन नहीं है। वे स्वतन्त्रता से अपनी रचना, कविता एवं नाटक भेज सकते हैं।

६ संस्थान के पैटर्न सदस्य, आजीवन-सदस्य तथा वार्षिक-सदस्यों को विश्वज्योति नि:शुल्क नियमत: भेजी जाती है।

७ अन्य संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के साथ इसका विनियम भी किया जाता है।

८ विश्वज्योति सम्बन्धी पत्रव्यवहार संचालक अथवा सम्पादक के पते पर किया जा सकता है।

९ किसी संस्था, पुस्तकालय एवं विद्वान् के आग्रह पर हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार को ध्यान में रखते हुए उनको विश्वज्योति नि:शुल्क भी भेजी जा सकती है।

१० विश्वज्योति में समालोचनार्थ समालोच्य पुस्तक या ग्रन्थ की दो प्रतियाँ भेजनी अनिवार्य हैं। जिस अंक में समालोचना प्रकाशित की जाती है, वह अंक लेखक को नि:शुल्क भेजा जाता है।

११ विश्वज्योति का मूल्य निम्न प्रकार से है- भारत में एक प्रति का मूल्य १० रु: विदेश में ३ डालर। भारत में वार्षिक सदस्यता १०० रु: तथा विदेश में वार्षिक सदस्यता- ३० डालर। भारत में आजीवन सदस्यता १२०० रु: तथा विदेश में ३०० डालर है। विशेषाङ्क २ भाग भारत में ५० रु: तथा विदेश में १२ डालर हैं।

विशेष:- (क) लेखक को पारिश्रमिक देने का नियम नहीं है।

(ख) प्रकाशित लेख की एक प्रति लेखक को भेजी जाती है।

सम्पादक

विषय-सूची

लेखक	विषय	विधा	पृष्ठांक
श्री अखिलेश निगम 'अखिल'	मंगलमय नव वर्ष	कविता	८
डॉ. सुरभि महाराज	पुण्य-पाप तथा विपाकसूत्र	लेख	९
डॉ. मृगांक मलासी	राष्ट्रीय अभ्युदय में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का योगदान	लेख	१३
सुश्री सुरेखा शर्मा	स्वतन्त्रता आन्दोलन में साहित्य की भूमिका	लेख	२०
सुश्री अनुभा जैन	वैदिक विचारधारा में धार्मिक चेतना	लेख	२६
श्री शंकर लाल माहेश्वरी	भारतीय संत-परम्परा में 'नाथ-सम्प्रदाय'	लेख	३०
डॉ. उषा किरण	हर्षयुगीन कला	लेख	३४
डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी	मनोनिग्रह सबसे बड़ा पुरुषार्थ	लेख	३८
श्री शिवम शर्मा	उपनिषदों में प्रतिपादित कर्मयोग एवं ज्ञानयोग	लेख	४०
श्री शिवदत्त शर्मा	केनोपनिषद् अनुमोदित ब्रह्मतत्त्व निरूपण	लेख	४३
श्री ओमप्रकाश बजाज	परोपकारी वृक्ष	कविता	४८
डॉ. रामसनेही लाल शर्मा	दूर नहीं है प्रात	कविता	४९
श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा	अहिंसा	बोध-कथा	५०
	संस्थान-समाचार		५२
	परिपत्र		५३

विश्वज्योति

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥ (ऋ. १,११३,१)

वर्ष ७१ } होश्यारपुर, माघ, २०७९; फरवरी २०२३ { संख्या ११

अङ्गादङ्गाल् लोम्नो लोम्नो,

जाते पर्वणि पर्वणि।

यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्,

तमिदं वि वृहामि ते।। (ऋग्वेद, १०.१६३.६)

(तेरे) (अङ्गात्-अङ्गात्) अंग-अंग (और) (लोम्नो लोम्नो) रोम रोम से (जातं) पैदा हुआ (रोग) तेरे (पर्वणि पर्वणि) जोड़-जोड़ में (घर कर चुका है)। (परन्तु) अब मैं तेरे (यक्ष्मं) इस रोग को (सर्वस्मात् आत्मनस्) संपूर्ण शरीर से (विवृहामि) निकाल फैंकता हूं।।

(वेदसार - विश्वबन्धुः)

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।।

(केनोपनिषद्-१.६)

कोई भी प्राणी जिसे चक्षुओं (आंखों) से देख नहीं सकता। अपितु आंखें जिसके द्वारा अपने विषयों को देख सकती हैं। उसको ही तुम ब्रह्म जानो। आंखों द्वारा देखने में आने वाले विषय ब्रह्म नहीं हैं। इस प्रकार आंखें अपने विषयों को जिसके द्वारा देखती हैं, वही ब्रह्म है।।

मंगलमय नव वर्ष

नववर्ष में आम नित्य पुष्प की भाँति खिलें,
जीवन में सदा हँसते-मुस्कुराते रहें।
ईश्वर की छाया हो पग-पग पर आपके,
नित खुशियों के मधुर गीत गाते रहें।
जगत और प्रकृति का साथ मिले सर्वदा,
नित्य निष्काम कर्म की ज्योति जगाते रहें।
'अखिल' की बार-बार, ईश से यही पुकार,
आप सब-शान्ति सरिता में नहाते रहें।।

सन्देश

अब हृदय के पट को फिर से खोलना है।
आदमी को आदमी से जोड़ना है।

रक्त सबका लाल है फिर भेद कैसा,
द्वेष की दीवार को अब तोड़ना है।

सूर्य की आँखें भी जाने लाल हैं क्यों
अब सभी के दिल को फिर झकझोड़ना है।

राष्ट्र के नभ में हैं बगुले उड़ रहे क्यों
नाग के विष दन्त को अब तोड़ना है।

क्यों अंधेरा हर तरफ छाया हुआ है,
अब अमावस वृक्ष की जड़ खोदना है।

ज़िन्दगी को ज़िन्दगी देना 'अखिल' अब,
ख़ून के रिश्तों को फिर से जोड़ना है।।

- श्री अखिलेश निगम 'अखिल' प्लाट नं. 30, सेक्टर - 07, सिग्रेचर बिल्डिंग,
गोमती नगर विस्तार, लखनऊ - 226 010

PEER REVIEWED JOURNAL
ISSN 0505-7523

पुण्य-पाप तथा विपाकसूत्र

- डॉ. सुरभि महाराज

क्रमश :-

देव की परिभाषा-

देव शब्द दिव् धातु से बना है। जो द्युति, गति आदि का सूचन करता है।

रज्जू का माप- रज्जू के माप के विषय में जैनतत्व प्रकाश में एक दृष्टान्त दिया गया है। वह इस प्रकार है- तीन करोड़, इक्कयासी लाख, सताईस हजार, नौ सौ सत्तर मन वजन का एक भार होता है। ऐसे एक हजार भार अर्थात् उठत्तीस अरब, बारह करोड़, उनासी लाख, सत्तर हजार मन वजन का लोहे का गोला छह मास, छह दिन, छह प्रहर और छह घड़ी में जितनी दूरी तय करे, उतनी लम्बी दूरी एक रज्जू की होती है।[1] इसी कथन को आधार मानकर वैज्ञानिकों ने रज्जू का प्रमाण निकालने का प्रयास किया है। वैज्ञानिक मान्यता है कि लोहे के गोले की ऊपर से नीचे की ओर गति अठहत्तर हजार पाँच सौ बावन मील प्रति घण्टा है तथा छह मास, छह घण्टे, छह दिन, छह प्रहर और छह घड़ी के चार हजार चार सौ चौरासी घण्टे और चौबीस मिन्ट होते हैं। इतने समय में वह लोहे का गोला पैंतीस करोड़, बाईस लाख, अठावन हजार, पाँच सौ उन्नानवें मील की दूरी तय कर लेगा और यह एक रज्जु का प्रमाण होगा।[2]

इसी प्रकार के एक दूसरे दृष्टान्त (जिसमें छह देव तथा बलिपिण्ड लिए छह देवियां बताई गई हैं) के आधार पर वाम ग्लास नेप्पिन ने अपनी पुस्तक डेर जेनिस्मस में रज्जु का प्रमाण १.३०८ (१०) निकाला है, जो एक देव बीस लाख, सतावन हजार एक सौ बावन योजन प्रतिक्षण चलते हुए छह महीने में तय करता है।[3] अत: देव के व्यावहारिक लक्षण यह हैं कि जिसका शरीर दिव्य अर्थात् सामान्य चर्म-चक्षुओं से न दिखाई दे, जिसकी गति (गमनशक्ति अतिवेग वाली हो, जिसके शरीर में रक्त, मांस आदि न हो, मनचाहे रूप बना सके, आँखों के पलक न झपके, पैर जमीन से चार अंगुल ऊँचे रहें, शरीर की छाया न पड़े। देव एक-गति का नाम है। इस गति में जो जन्म लेता है, वह देव कहा जाता है। सैद्धान्तिक भाषा में देवगति नाम कर्म के उदय से जीव जिस पर्याय को धारण करता है, वे देवगति है और, उस देवायु को भोगने वाला जीव देव कहा जाता है।[4] आभ्यन्तर कारण देवगति नामकर्म के उदय होने पर नाना प्रकार की बाह्य विभूति से द्वीप समुद्रादि अनेक स्थानों में इच्छानुसार जो क्रीड़ा करते हैं, वे

१ जै. त. प्र. (अ. ऋ. जी.) पृ. ४४
२ त. सू. के. मु. (४.४८-५३) वि.
३. त. सू. के. मु. (४.४८-५३) वि.
४. त. सू. के. मु. (४.१) विवे.

देव कहलाते हैं।[५] अथवा जो दिव्यभाव-युक्त अतिमादि आठ गुणों से नित्य क्रीड़ा करते हैं और जिनका प्रकाशमान दिव्य शरीर है, वे देव कहे गये हैं।[६]

देवलोक में देवों की उत्पत्ति-

देवों को उत्पत्ति उत्पादशय्या में होती है। अर्थात् देव एक विशेष प्रकार की शय्या पर जन्म लेते हैं, वे गर्भज नहीं होते। शययाओं पर देवदूष्य वस्त्र टंगा रहता है। धर्मात्मा और पुण्यात्मा जीव जब उसमें उत्पन्न होते हैं तो वह अंगारों पर डाली हुई रोटी के समान फूल जाती है। तब पास में रहे हुए देव उस विमान में घटानाद करते हैं और उसकी अधीनता वाले सभी विमानों में घण्टे का नाद हो जाता है। घण्टानाद सुनकर देव और देवियां उस उत्पाद शय्या के पास इकठ्ठे हो जाते हैं।[७] और जयजयकार की ध्वनि से विमान गूँज उठता है। अन्तर्मुहूर्त (४८ मिन्ट के अन्तर्गत समय को) के बाद उत्पन्न हुआ देव छहों पर्याप्तियों आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छवास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति से पर्याप्त होकर तरुण अवस्था वाले शरीर को धारण कर लेता है और देवदूष्य वस्त्रों से अपने शरीर को आच्छादित कर शय्या पर बैठ जाता है एवं पास में खड़े देव उससे उनके नाथ बनने में हेतु पूछते हैं। इसके उत्तर में वह अवधिज्ञान के द्वारा अपने पूर्वजन्म पर विचार करता है और उन लोगों को जो कि उसके पूर्व जन्म में इष्ट- मित्र होते हैं, अपने आने की सूचना देने के लिए उद्यत होता है। इतनें में देवता उसे रोकते हैं और पूर्व जन्म के मित्रों को मिलने से पूर्व देवलोक के सुख की अनुभूति कराने के लिए उसे प्रेरित करते हैं।

इसके अनन्तर नृत्य करने वाले अनीक जाति के देव अपनी दाहिनी भुजा से एक सौ आठ कुमार और बाई भुजा से एक सौ आठ कुमारियाँ निकाल कर बत्तीस प्रकार का नाटक करते हैं। गन्धर्व, अनीक जाति के देव उन्नचास प्रकार के वाद्यों के साथ छह राग और तीस रागनियां मधुर स्वर से अलापते हैं। इस नृत्य में मनुष्यलोक के दो हजार वर्ष व्यतीत हो जाते हैं। वह देव वहाँ के सुख में लुब्ध हो जाता है और दिव्य भोगोपभोग में लीन हो जाता है।[८]

इन्द्रों के निवास स्थान, सभादि या इन्द्रों के नाम पर ही स्वर्गों का नाम रखा गया है। यह व्यवहार बारह स्वर्गों तक ही हो सकता है। इससे ऊपर देवलोकों में नहीं। देवों की अकाल (समय से पहले) मृत्यु नहीं होती।

देवों के प्रकार[९] - देव चार प्रकार के कहे गए हैं :- १. भवनवासी, २. वाणव्यन्तर, ३. ज्योतिष्क, ४. वैमानिक

१. **भवनवासी देव**- जो देव प्राय: भवनों में निवास किया करते हैं, वे भवनवासी देव कहलाते हैं। विशेषतया केवल असुर कुमार देव ही प्राय:

५. स. सि. ४.१.४४३.४ ६. पंच संग्रह - १.६३ ७. जै. त. प्र.- पृ. १०९-११०
८. जै. त. प्र., (आ. अ. ऋ.) पृ. ११० ९. भगवती. सू. २१.२, ३०७

आवासों में रहते हैं। इनके आवास नाना रत्नों की प्रभा वाले चंदोवों से युक्त हैं। उनके आवास इनके शरीर की अवगाहना के अनुसार ही लम्बे, चौड़े तथा ऊँचे होते हैं। शेष नागकुमारादि नौ प्रकार के भवनपति देव भवनों में रहते हैं, आवासों में नहीं।[10] भवनवासी देवों के दस भेद कहे हैं[11]- १. असुर कुमार, २. नाग कुमार, ३. विद्युत्कुमार, ४. सुवर्ण कुमार, ५. अग्निकुमार, ६. वात कुमार (पवन कुमार), ७. स्तनित कुमार, ८. उदधि कुमार, ९. द्वीप कुमार, १०. दिशा कुमार२

२. वाणव्यन्तर देव- "वि" अर्थात् विविध प्रकार के "अन्तर" अर्थात् आश्रय जिनके हो, वे व्यन्तर हैं। भवन, नगर और आवासों में, विविध जगहों पर रहने के कारण ये देव व्यन्तर कहलाते हैं। व्यन्तरों के भवन रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम रत्न काण्ड में ऊपर-नीचे सौ-सौ योजन छोड़कर शेष आठ सौ योजन प्रमाण मध्यभाग में हैं। इनके नगर तिर्यग् लोक में भी हैं और इनके आवास तीनों लोकों में हैं। अथवा जो अधिकतर वनों में, वृक्षों में, प्राकृतिक सौन्दर्य वाले स्थानों में या गुफादि के अन्तराल में रहते हैं। इस कारण वे देव वाणव्यन्तर कहलाते हैं।[12]वाणव्यन्तर देव आठ प्रकार के हैं[13]- १. किन्नर, २. किंपुरुष, ३. महोरग, ४. गन्धर्व, ५. यक्ष, ६. राक्षस, ७. भूत, ८. पिशाच

अण्यन्नी, पण्यन्नी आदि नाम के व्यन्तर देवों के जो अन्य आठ प्रकार कहे जाते हैं, उनका समावेश इन्हीं आठों में हो जाता है।[14]

३. ज्योतिष्क देव-

जो लोक को द्योतित (ज्योति) प्रकाशित करते हैं, वे ज्योजिष्क देव कहलाते हैं अथवा जो द्योतित करते हैं, वे ज्योतिष् विमान हैं, उन ज्योतिर्विमानों में रहने वाले देव ज्योतिष्क देव कहलाते हैं। अथवा जो मस्तक के मुकुटों से आश्रित प्रभामण्डल सदृश सूर्य मण्डलादि के द्वारा प्रकार करते हैं, वे सूर्यादि ज्योतिष्क देव कहलाते हैं।[15] ज्योतिष्क देव पांच प्रकार के हैं[16] १. चन्द्र, २. सूर्य, ३. ग्रह, ४. नक्षत्र, ५. तारा

४. वैमानिक देव-

ये ऊर्ध्वलोक के विमानों में ही निवात करते हैं। इसलिए वैमानिक या विमानवासी देव कहलाते हैं।[17] वैमानिक देव दो प्रकार के होते

---

१०. जीवाजीवा. (डा.रा.मु.) प्र. प्रतिपत्ति, सू.४२, पृ.१०९, प्रज्ञा. सू. (धुवा. मधु. मु.), प्र. प्रज्ञापनापद, सू. १३९-१४७, पृ. ११४

११. भवनवासिनोऽसुर नागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधि द्वीपदिक्कुमाराः। त. सू. ४.११

१२. जीवो. (डा. रा. मु.) प्र. प्रति., सू. ४२, पृ. १०९-११०

१३. त.सू. ४.१२

१४. उत्तरास. सू. (युवा. मधु. मु.) ३६.२०७ (विवेचन) पृ. ६७८

१५. प्र.सू. (यूवा. मधु. मु.) पृ. प्रज्ञापनापद सू. १३९-१४७ (विवेचन) ११५-११६

१६. जीव. मि. सू. (डा. रा. मु.) प्र. प्रति. सू. ४२, पृ. ११०; ज्योतिष्काः सूर्याश्चन्द्रमसो ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णतारकाश्च- त. सू. ४.१३

१७. वैमानिकाः (त. सू.) ४.१७. जीवा .सू. (डा. रा. मु.) प्र. प्रतिपत्ति, सू. ४२, पृ. ११०

हैं[18]- १. कल्पोपपन्न या (कल्पोपम), २. कल्पातीत

कल्पोपन्न का अर्थ है- आचार, व्यवहार और मर्यादा अथवा जहाँ कल्प आचार मर्यादा हो अर्थात् इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिकादि को मर्यादा और व्यवहार हो, वे कल्पोपपन्न हैं। जहां उक्त व्यवहार या मर्यादा न होवे, वे कल्पातीत हैं। कल्पोपपन्न के बारह भेद हैं[19]- १. सौधर्म, २. ईशान, ३. सनत्कुमार, ४. माहेन्द्र, ५. ब्रह्मलोक, ६. लान्तक, ७. महाशुक्र, ८. सहस्रार, ९. आणत, १०. प्राणत, ११. आरण, १२. अच्युत

कल्पातीत देव दो प्रकार के हैं- ग्रैवेयक और अनुत्तरोपपातिक। यह संसार पुरुष के आकार-सा प्रतीत होता है। इसलिए इसे लोकपुरुष संज्ञा भी प्राप्त हैं।[20] अत: इस लोकपुरुष की = ग्रीवा पर स्थित होने से ये विमान ग्रैवेयक कहलाते हैं। ग्रैवेयक देव नौ प्रकार के हैं[21]- १. भद्र, २. सुभद्र, ३. सुजात, ४. सुमनस, ५. प्रियदर्शन, ६. सुदर्शन, ७. अमोघ, ८. सुप्रतिबद्ध, ९. यशोधर

अनुत्तार का अर्थ है- सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ विमान। उन अनुत्तर विमानों में उपपात यानि जन्म होने के कारण ये देव अनुत्तरोपपातिक कहलाते हैं। अनुत्तर विमान के पाँच प्रकार हैं[22]- १. विजय, २. वैजयन्त, ३. जयन्त, ४. अपराजित, ५. सर्वार्थ सिद्ध

यद्यपि अन्य निकायों के देवों के भी विमान होते हैं, किन्तु वैमानिक देवों के विमानों की यह विशेषता है कि वे अतिशय पुण्य के फलस्वरूप प्राप्त हो पाते हैं, उनमें निवास करने वाले देव भी विशेष पुण्यवान् होते हैं। जैसे- एक सामान्य मकान और कोई आलीशान बंगला, जिसमें आधुनिकतम सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। मकान या निवास स्थान दोनों ही हैं, किन्तु जैसा अन्तर इन मकानों में हैं, वैसा ही अन्तर अन्य देवों और वैमानिक देवों के विमानों में समझना चाहिए।[23]

- चन्दा जैन आश्रम, करताराम गली, वेणी प्रसाद के समाने, निकट ठाकुरद्वारा, लुधियाना।

---

१८. कल्पोपपन्ना: कल्पातीताश्च- त. सू. ४.१८ –
जीवा. सू. (डा. रा. मु.) प्र. प्रतिपत्ति, सू. ४२, पृ. ११०

१९. त. सू. ४.२०   २०. योगशास्त्र (लोकभाग) ४.१०३

२१. त. सू. ४.२० ; जीवा. सू. (डा. रा. मु.) प्र. प्रति., सू. ४२

२२. प्रज्ञा. सू. (युवा. मधु. मु.), प्र. प्रज्ञापनापद, सू. १३९-१४७; त. सू. ४.२०

२३. तङसू. (के. मु.) ४.१७-२० (विवेचन)

PEER REVIEWED JOURNAL
ISSN 0505-7523

विश्वज्योति वर्ष: ७१, सं. ११
फरवरी ,२०२३

राष्ट्रीय अभ्युदय में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का योगदान

- डॉ मृगांक मलासी

१९वीं सदी आधुनिक भारत के इतिहास में विशेष स्थान रखती है। इसे राष्ट्रीय अभ्युदय में राष्ट्रवादी विचारों के पुनरुत्थान के दौर के रूप में देखा जाता है। भारत में राष्ट्रीय-चेतना के विकास में सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन, ब्रिटिश शासन के आर्थिक कुप्रबंधन, पश्चिमी शिक्षा पर अत्यधिक जोर, कृषक आंदोलन, प्रेस और साहित्य आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुख्यरूप से भारत में आधुनिक राजनीतिक चेतना का जागरण कांग्रेस की स्थापना के प्रारंभिक दिनों में माना जाता है जिन दिनों भारत में कांग्रेस वैधानिक तरीके से स्वशासन हासिल करने के लिए नरम नीति पर चल पड़ी थी। उन्हीं दिनों १९वीं सदी के अंत से लेकर २०वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों तक राष्ट्रवादियों का एक अन्य भाग विदेशी आधिपत्य से मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लक्ष्य से काम कर रहा था, इनके विचार एवं तरीके क्रांतिकारी तथा चरमपंथी थे। इस चरमपंथी राष्ट्रवाद का पहला उदाहरण बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में मुंबई में पहले-पहल प्रकट हुआ। वैलेंटाइन शिरोल के शब्दों में तिलक अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध दुर्भावना फैलाने वाले लोगों में सबसे खतरनाक व्यक्ति हैं तथा वह सचमुच भारत में अशांति के जनक हैं। १८९७ ईसवी में राजद्रोह के अभियोग में तिलक को जेल की सजा मिलने पर संपूण देश में राष्ट्रीय-भावना पर गंभीर प्रभाव पड़ा। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने १८९७ के कांग्रेस अधिवेशन में कहा था कि तिलक के लिए हमारे ह्रदय में गहरी सहानुभूति है, हमारी भावनाएं बंदीगृह में भी उनके साथ हैं। सारा राष्ट्र आज व्यथित है ऐसे ही कई राष्ट्रीय घटनाओं ने भारतीय राष्ट्रवाद के बीज को पनपाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत में राष्ट्रवाद के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित रहे-

१ राष्ट्रवाद में धार्मिक सुधार आंदोलन:- १९वीं शताब्दी में भारत में अनेक सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुए। यह आन्दोलन हिंदू, मुसलमानों, पारसियों और अन्य धार्मिक इकाइयों में देखा गया। अनेक आंदोलन जैसे ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज आदि ने क्षेत्रीय सीमाओं के बाहर भी लोगों को राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत किया। बंगाल, पंजाब, मुंबई और मद्रास में हिंदू आपस में मिलने लगे और आचार-विचारों का आदान-प्रदान करने लगे, इससे सामाजिक जागृति आई और साथ ही सांस्कृतिक जागृति ने राष्ट्रवाद को फलने-फूलने में महत्वपूर्ण

भूमिका अदा की।

२ ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव- ब्रिटिश सरकार ने भारत में पूंजीवादी व्यवस्था को अपनाया जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था केंद्रित होती चली गई। उपनिवेशवादी शासन-व्यवस्था ने गांवों की आर्थिक संप्रभुता को छिन्न-भिन्न कर दिया। प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेताओं को, जिनमें दादाभाई नैरोजी, आर.सी: दत्त, गोविंद रानाडे, सुरेंद्रनाथ बनर्जी आदि को यह विश्वास हो गया था कि भारत की गरीबी, आर्थिक पिछड़ापन और न्यून विकास की मुख्य वजह भारत में ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियां हैं।

३ पाश्चात्य शिक्षा और परिवहन के आधुनिक साधनों की भूमिका-पश्चिमी शिक्षा-व्यवस्था के अनेक सकारात्मक पहलू भी हैं। मानवता, समानता, भाईचारा और राष्ट्रीयता जैसे तार्किक विचार इसी शिक्षा की देन हैं। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् अब भारतीय भी पश्चिम के विचारों को, जैसे मिल्टन, वाल्टेयर मेजिनी आदि के विचारों से अवगत हो गए। इस तरह पश्चिमी शिक्षा से बुद्धिजीवियों का एक नया वर्ग सृजित हुआ जो इतिहास की दृष्टि में १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के समय के नेतृत्व से अधिक प्रगतिशील था। अंग्रेजों ने अपने साम्राज्यवादी हितों के लिए आधुनिक प्रशासन-व्यवस्था, न्यायिक-व्यवस्था, परिवहन-व्यवस्था जैसे आधुनिक साधनों को लागू किया। लेकिन इन्हीं साधनों से भारत के बुद्धिजीवियों ने इसका फायदा लिया और भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

४ साहित्यिक लेख और स्वतंत्र मीडिया-स्वराज आंदोलन के दौरान अनेक साहित्यिक लेख और स्वतंत्र मीडिया ने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जन्म दिया। समाचारपत्र द हिंदू बंगाली, मराठा, केसरी, अमृत बाजार पत्रिका जैसी पत्रिकाओं के साथ बंकिम चंद्र चटर्जी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, शिब्ली नोमानी आदि ने अनेक पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भारत के राष्ट्रवाद को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।१८८२ में लिखी गई आनंदमठ और उसके लिखे गए एक गीत वंदे मातरम् ने लाखों लोगों में भारत की आजादी और राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

५ किसान आंदोलन-उपनिवेशवादी राज में भारत में कृषि-उत्पादन पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। जमीदारी-व्यवस्था में खेतिहर मजदूरों को जमीदारों की दया पर छोड़ दिया गया। जमीदारों ने उनसे भारी-भरकम कर वसूल किया जिससे भुगतान असंतुलन की स्थिति आ गई। रैयतवाडी-व्यवस्था में सरकार ने स्वयं ही भारी राजस्व वसूल करना शुरू किया जिससे खेतिहर मजदूर महाजनों के कर्ज तले दबने के लिए मजबूर हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि जो लोग खेतों के मालिक थे वह खेती की बटाई में

मजबूरी से मजदूरी करने लगे। मजदूरों की ओर से इस व्यवस्था के खिलाफ अनेक स्थानों पर संघर्ष की स्थिति देखने को मिली। कृषक-आंदोलनों ने भी भारत में राष्ट्रवादी-भावना को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

६ **राष्ट्रीय अभ्युदय के राजनीतिक कारण-** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना दिसंबर १८८५ में अंग्रेजों ने स्वयं की थी और इसका उद्देश्य आम-जनता में बिट्रिश शासन के विरुद्ध पनपते असंतोष को कम करना था। वास्तव में देखें तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में कोलकाता और मुंबई के बुद्धिजीवियों के एक नए वर्ग की मुख्य भूमिका थी उनमें अधिकांश लोग १८६० और१८७० के दशकों के प्रारंभिक वर्षों में लंदन में मिल चुके थे और इस बात की चर्चा हो चुकी थी कि अखिल भारतीय स्तर पर एक राजनीतिक पार्टी की जरूरत है।

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रथम चरण १८८५ से १९०५ में कांग्रेस के अधिवेशनों में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों की संख्या को यदि हम कांग्रेस तथा राष्ट्रीय आंदोलन की शक्ति का मापदंड मानें तो उसके पहले अधिवेशन में ७२ दूसरे में४३६ तथा तीसरे अधिवेशन में ६०७ प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिससे स्पष्ट है कि उनकी शक्ति लगातार बढ़ रही थी। इसके बावजूद कांग्रेस के कार्यों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि उस काल में राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप उदारवादी या नरम राष्ट्रीयता का ही रहा। राष्ट्रीय आंदोलन के उदारवादी नेताओं में गोपाल कृष्ण गोखले महादेव गोविदं रानाडे, दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, मदन मोहन मालवीय, हृदयनाथ कुंजरू आदि उल्लेखनीय थे जिन्होंने उदारवादी चिंतन का विकास किया और इस देश के राजनीतिक, सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों में राष्ट्रवाद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

कांग्रेस की स्थापना के बाद भारतीय राष्ट्रवाद धीरे-धीरे अपनी विकास की गति पकड़ने लगा राजनीतिक दृष्टि से कांग्रेस के प्रथम उदारवादी चरण में भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में निम्न भूमिका रही.....

राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति जनजागृति पैदा करना-कांग्रेस के प्रथम चरण में उस पर उदारवादियों का पूर्ण प्रभुत्व रहा और उनके नेतृत्व में राष्ट्रीय जागृति का प्रसार हुआ। प्रारम्भिक कांग्रेस पर उदारवादी नेताओं का प्रभाव व्यापक था और उसके नेतृत्व वाली कांग्रेस जनता की आशाओं तथा आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति बन गई। उदारवादियों ने राष्ट्रीय एकता का आह्वान किया जिसका भारतीय जनता ने अनुकूल उत्तर दिया उनके नेतृत्व में कांग्रेसी, जो दूसरे शब्दों में राष्ट्रीय आंदोलन ही था, समाज की प्रवक्ता बन गई जो प्लासी के बाद १०० साल के दौरान हुए आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक

परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप विकसित हुआ था। उदारवादियों के नेतृत्व में यह संस्था ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति को चुनौती देने की एक शक्तिशाली औजार बन गई।

कांग्रेस को अखिल भारतीय स्वरूप अथवा राष्ट्रीय आंदोलन का रूप देना-यद्यपि कांग्रेस एक मध्यवर्गीय संस्था थी तथापि उदारवादियों ने कुछ ही समय में इसे अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान कर दिया और इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन का प्रतीक बना दिया। उदारवादी नेताओं ने सभी वर्गों की आवश्यकताओं में दिलचस्पी ली यदि मध्यम वर्ग की तरफ से सरकार को यह कहा जाता था कि नौकरियों के लिए चाहे वह सैनिक नौकरी हो या असैनिक। विशेषकर उच्चतम नौकरियों में भारतीयों के लिए सुविधाएं बढ़ाई जाएं तो दूसरी तरफ देहात की गरीब जनता की तरफ से यह भी मांग रखी जाती थी कि जमीदारों के द्वारा सरकार को दी जाने वाली मालगुजारी का स्थाई बंदोबस्त हो और किसान भी जमीदार को निश्चित लगान दें। जंगलात के कानूनों का विरोध किया गया जिससे गरीब देहातियों को कष्ट हुआ था और साथ ही नमक-कर कानून के विरुद्ध भी आवाज उठाई गई थी जो गरीबों पर भारी पड़ता था। इसके अतिरिक्त उदारवादियों ने आर्थिक प्रश्नों पर भी चर्चा की और इस संबंध में कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित किए। ऐसे प्रश्न उठाए जाते थे जैसे सैनिक खर्च का भारी बोझ है। भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रतिकूल पड़ने वाली विदेशी विनिमय-व्यवस्था कार्यान्वित न की जाए। प्रशासन का खर्च भारी है टैक्स भारी है शुल्क नीति सही नहीं है। अंतिम मांगों को भारतीय व्यापारी-वर्ग के हित में उठाया जाता था। उदारवादियों न जनशिक्षा की अवहेलना की तथा कानून व प्रशासन के सुधार के सुझाव दिए और इस बात पर भी बल दिया गया कि प्रशासन और न्याय को अलग किया जाए। उन्होंने स्थानीय स्वायत्त शासन के कानून की त्रुटियों पर भी ध्यान दिलाया। उदारवादियों के विचार-विमर्श में भारत के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कल्याण के लक्ष्य प्रतिबिंबित होते थे और उनके प्रस्ताव में भारत के लिए अधिक ऊंचे तथ स्वतंत्र जीवन की मांग थी। उदारवादियों के नेतृत्व में कांग्रेसी भारत के प्रतीक बन गए इससे भारत में राष्ट्रवाद का एक नया उदय हो रहा था।

साम्राज्यवादरूपी शत्रु के विरुद्ध देशवासियों को एकजुट करना-उदारवादी नेताओं ने प्रत्येक मंच पर राजनीतिक मांगों का डटकर प्रचार किया। फलस्वरूप शिक्षित भारतीय काफी प्रभावित हुए और देश के राजनीतिक मामलों में रुचि लेने लगे। उन्हें व्यापक स्तर पर राजनीतिक चेतना पैदा करने में सफलता मिली। लोगों में विशेषकर शिक्षित वर्ग में यह भावना विकसित हुई कि उनका संबंध एक भारत नाम के राष्ट्र से है। देशवासियों में अपने राजनीतिक, आर्थिक एवं

सांस्कृतिक हितों की रक्षा की भावना पहुंची और वह समझने लगे कि उन सभी का एक ही शत्रु है जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के रूप में भारत में मौजूद है।

आर्थिक प्रश्नों को राजनीतिक राष्ट्रवाद के साथ जोड़कर प्रस्तुत करना-भारत के ब्रिटिश शासक अपनी उपलब्धियों से बहुत संतुष्ट थे और वे उन लोगों से नाराज होते थे जो सरकार में दोष निकालते थे। आर्थिक परिणामों का वर्णन तथा साम्राज्यवाद का जो दूसरा पहलू सामने लाते थे उदारवादी राष्ट्रवादियों ने विदेशी हुकूमत के आर्थिक शोषण का पर्दाफाश किया। उनके प्रयत्नों से भारतीय बुद्धिजीवीवर्ग विदेशी-शासन की बुराइयों को अच्छी तरह समझ सके। प्रख्यात इतिहासकार डॉ ताराचन्द ने लिखा है, ब्रिटिश शासन के लाभों को मानते हुए ब्रिटिश संबंधों को कायम रखने की मान्यता को स्वीकार करते हुए और ब्रिटिश ताज के प्रति वफादारी व्यक्त करते हुए भी भारतीय नेताओं ने यह जरूरी समझा कि सरकार का ध्यान इस आशा से अपनी शिकायतों की ओर खींचा जाए कि उदार शासक उनके अस्तित्व का पता पाते ही उन्हें उसी समय दूर कर देंगे। वह ईमानदारी से यह समझते थे कि ब्रिटिश शासन हितकारी है पर इससे कुछ राजनीतिक और आर्थिक त्रुटियां हैं। दो महत्वपूर्ण त्रुटियां यह थीं कि सरकारी काउंसिल व परिषदों में जनता की आवाज नहीं गूंजती थी और उच्चतर सेवाओं में भारतीयों की नियुक्ति नहीं होती थी। दूसरी श्रेणी की शिकायतों में मुख्य यह थी कि भारत की गरीबी बढ़ती जा रही थी और राष्ट्रीय प्रतिव्यक्ति आय घटती जा रही थी। सूखे और किसानों की कर्जदारी के प्रकोप से जीवन की आशा अल्पावधि और ऊंची मृत्युदर बढ़ती चली जा रही थी। इसके अलावा यह आम धारणा थी कि गरीबी का महत्वपूर्ण कारण यह था कि भारत का धन बराबर बाहर जा रहा है। सरकार की आर्थिक नीतियों के सबसे साहसी और खुले आलोचक दादाभाई नौरोजी थे। इस उदारवादी नेता ने अंग्रेजों द्वारा भारत के आर्थिक शोषण का विश्व के सामने भंडाफोड़ किया और भारतीय राष्ट्रवाद के आर्थिक सुधारों के सिद्धांत का निर्माण किया तथा ब्रिटिश शासन को गंभीर और व्यावहारिक चेतावनी दी। लेकिन इस संपूर्ण समस्या का समाधान उन्होंने शांतिपूर्ण और उदारवादी ढंग से प्रस्तुत किया। आर्थिक कारणों से भी भारत में राष्ट्रवाद का बीज पनपने लगे। उदारवादियों ने आर्थिक आंदोलन को राजनीतिक आंदोलन के साथ जोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन को सशक्त बना लिया। देश में व्याप्त गरीबी यह विश्वास दिला गई कि यह विदेशी- शासन का परिणाम है। इस सिद्धांत ने राजनीतिक आंदोलन में ईंधन का काम किया।

ब्रिटिश शासन की त्रुटियों को बताकर राष्ट्रीय आंदोलन को गति देना-उदार राष्ट्रवादियों ने

सरकार के कार्यों की नरम आलोचना की, लेकिन ब्रिटिश-शासन की त्रुटियों को उभारने में उन्होंने कोई कसर नहीं रखी और जनता के सामने सरकार के नग्न रूप को ला खड़ा किया। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के वास्तविक चरित्र का पर्दाफाश करने में उन्होंने दर्पण का काम किया जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को गति मिली और उसका प्रसार संपूर्ण देश में हुआ।

समान राजनीतिक तथा आर्थिक कार्यक्रम प्रस्तुत करके विचार विमर्श के लिए एक रंगमंच प्रदान करना और भारतीय राष्ट्रवाद का गहन बीजारोपण करना-१८८५ से १९०५ के बीच का समय भारतीय राष्ट्रवाद के बीजारोपण का समय था और उदारवादी चिंतकों ने इस बीज को अच्छी तरह और गहराई से बोया। उदारवादियों ने देशवासियों को जागृत किया कि वे सांप्रदायिक और क्षेत्रीय भावनाओं से ऊपर उठें तथा अपने हृदय में सामान्य राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करें। यह एक महत्त्वपूर्ण सफलता थी कि उन्होंने सभी महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार-विमर्श के लिए एक रंगमंच प्रदान किया तथा भावी राजनीतिक आंदोलन के लिए प्रबल जनमत तैयार कर राष्ट्रीय आंदोलन का वातावरण पैदा किया।

उदारवादी नेताओं अथवा नरमपंथी राष्ट्रवादियों को ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है। यद्यपि १८५७ की क्रांति भारत का पहला स्वाधीनता संग्राम था लेकिन वैधानिक रूप में भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए सरकार से लड़ना उदारवादी नेताओं ने सिखाया। उदार राष्ट्रवादियों की नीतियों से ही परिवर्तन लाकर बाद में कांग्रेस ने अपना उद्देश्य औपनिवेशिक स्वराज्य तथा पूर्ण स्वाधीनता घोषित किया। उदारवादी चरण ने ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला रखी और उसे व्यापक बनाकर राष्ट्रवाद को सैद्धांतिक और वैचारिक धरातल पर प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय अभ्युदय में गरम दल का योगदानं-१९३५ में कुछ भाइयों एवं आंतरिक कारकों ने भारत में राष्ट्रीयता के संदेश को तितरवितर कर दिया। यह वर्ष न केवल हमारे देश के वरन संपूर्ण एशिया के इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष था। रूस जापान युद्ध के परिणामों ने श्वेत जातियों की महत्ता का अभिमान चूर कर दिया था। इस घटना ने उपनिवेशों में विदेशी राष्ट्रों के शिकंजे से मुक्त होने की नई आशाएं जगह दी थी।

उसी समय देश के भीतर लॉर्ड कर्जन की सर्वसंपूर्ण व्यवस्था ने राष्ट्रीय भावनाओं को अत्यधिक नीचे उतार दिया था। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल, अरविंद घोष आदि के नेतृत्व में तत्कालीन भारतीय राजनीति चरम पंचवाद के विकास के लिए अत्यधिक जिम्मेदार थी। २९ जुलाई उन्नीस सौ ५ ईसवी को कर्जन ने बंगाल और असम के

नए प्रदेश को जन्म दिया। इससे बंगाल और आसाम की जन-भावनाओं को गहरी चोट लगी और इसका कड़ा विरोध किया गया। इससे राष्ट्रव्यापी असंतोष की ज्वाला भड़क उठी और संपूर्ण भारतीय समुदाय में राष्ट्रीय अभ्युदय में नया संचार आया।

राष्ट्रीय अभ्युदय का अंतिम चरण-राष्ट्रीय अभ्युदय का तीसरा और अंतिम चरण १९१९ में शुरू हुआ जब विशाल जन-आंदोलन का युवा आरंभ हुआ। इस काल में भारतीय जनता ने संभवत: विश्व-इतिहास के सबसे बड़े जन-संघर्ष लड़े और भारत की राष्ट्रीय क्रांति की विजय हुई। इस चरण का नेतृत्व पूर्णरूप से महात्मा गांधी जी ने किया और उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे विशाल आंदोलनों से भारतीय जनता में राष्ट्रवाद का बीजारोपण किया।

१९१५ में जब मद्रास मेंउनका स्वागत किया गया तो दक्षिण अफ्रीका में अपने साथ संघर्ष करने वाले साधारण लोगों के बारे में उन्होंने कहा, '' आप कहते हैं की इन महान् स्त्री-पुरुषों को प्रेरणा मैंने दी, मगर मैं इस सम्मान को स्वीकार नहीं कर सकता, उल्टे जरा से भी इनाम की आशा किए बिना श्रद्धा के साथ कोई काम करने वाले इन सीधे-साधे लोगों ने ही मुझे प्रेरणा दी। मुझे अपनी जगह पर अधिक रखा तथा जिन्होंने अपने बलिदान के द्वारा अपनी महान् सुविधा के द्वारा तथा महान् ईश्वर में अपने महान् विश्वास के द्वारा मुझसे वह सब कराया, जो मैं कर सका, ''

इसी तरह १९४२ में जब उनसे पूछा गया कि वह साम्राज्य की शक्ति का सामना कैसे कर सकेंगे तो उन्होंने उत्तर दिया, '' लाखों-लाख मूक जनता की शक्ति के द्वारा ''

अंत में १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता का स्वर्ण उदय हुआ और करोड़ों भारतीयों की वर्षों-वर्ष की गई स्वतंत्रता-प्राप्ति की प्रतीक्षा पूरी हुई। राष्ट्रीय अभ्युदय के इतिहास का भी एक युग पूरा हुआ और दूसरा आरंभ तथा इस युग-परिवर्तन की बेला मे उसने भारत तथा उसकी जनता की ओर इससे भी बढ़कर मानवता की सेवा के लिए नए सिरे से प्रतिज्ञा की तथा अपने आप को समर्पित किया।

-सहायक आचार्य, डॉ. शिवानन्द नौटियाल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग, (उत्तराखण्ड)

PEER REVIEWED JOURNAL
ISSN 0505-7523

स्वतन्त्रता आन्दोलन में साहित्य की भूमिका

- सुश्री सुरेखा शर्मा

भाषा मनुष्य के द्वारा विकसित किया गया एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को दूसरों तक सम्प्रेषित करता है और दूसरों के विचारों को ग्रहण करता है। निश्चित है कि भाषा के माध्यम से वैचारिक आदान-प्रदान करने वाले दोनों ही पक्ष एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। भाषा के लिखित रूप अर्थात् सहित्य के पढ़ने, सुनने तथा देखने से व्यक्ति, समुदाय और समाज प्रभावित होते हैं। साहित्यकारों की वाणी सुप्त समाज और राष्ट्र को हमेशा जगाती आई है। जिस देश और समाज में साहित्यकार रहता है, उसके हितों के विषय में बोलना और लिखना उसका कर्त्तव्य हो जाता है। इसी कर्त्तव्य-भावना की अनुपालना में उसकी लेखनी से अनेक प्रकार के प्रेरणापरक स्वर निकलते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रायः सभी देशों के स्वतन्त्रता-आन्दोलनों में साहित्य की विशेष भूमिका रही है। ४ जुलाई १७७६ को इंग्लैण्ड से स्वतन्त्र हुए अमेरिका की स्वतन्त्रता में वहाँ के साहित्यकारों का बड़ा योगदान रहा। अमेरिका में अफ्रीका से ३१० वर्षों (१५५५-१८६५) तक काले दास लाये जाते रहे। लेकिन अमेरिका की महिला साहित्यकार हैरियट बीचर स्टो द्वारा दास-प्रथा पर लिखित Uncle Tom's Cabin नामक दर्दनाक उपन्यास ने अमेरिका में क्रांति उत्पन्न कर अब्रहम लिंकन ने अश्वेत लोगों को दास-प्रथा से मुक्ति दिलाई। सन् १७८९ की फ्रेंच-क्रान्ति भी वॉल्टेयर के साहित्य का परिणाम थी । वर्ष १९१७ में रूस को जार-शासन की तानाशाही से मुक्ति दिलाने में लियो टॉलस्टाय, मैक्सिम गोर्की तथा इवान तुर्गनेव जैसे साहित्यकारों के साहित्य ने महती भूमिका निभाई थी। परन्तु साम्राज्यवादी और अधिनायकतावादी शासन - व्यवस्थाओं द्वारा क्रांति और उद्‌बोधनात्मक विचारों वाली रचनाओं का सदैव दमन किया जाता है। प्रेमचंद की **'सोजे वतन'** पुस्तक में भारतीयों को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्ति की प्रेरणा दी गई थी। फलतः इस पुस्तक को अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया। विश्व साहित्य इस बात का साक्षी है कि जब-जब किसी राष्ट्र पर संकट के बादल घिरते हैं, जो जनमानस में उस संकट से पार जाने की शक्ति के अनुप्रेरक रूप में साहित्य सामने आता है। जब किसी देश पर विदेशी आक्रमण होता है, तो उस देश के साहित्य में स्वतः ही विद्रोह का स्वर गुंजित होने लगता है। वास्तव में यह विद्रोही स्वर धर्म और संस्कृति की रक्षा के साथ मानव-मूल्यों के संरक्षण का वाहक होता है।

साहित्य ने हमेशा व्यक्ति को बन्धनमुक्त

करने में अद्‌भुत-अपूर्व भूमिका का निर्वाह किया है। प्रत्येक युग की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ होती है जिनकी पूर्ति के लिए वह साहित्य का मुखापेक्षी होता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल इस बात का साक्षी है कि चारणों की वीर रसात्मक कविताओं को सुनकर किस तरह तत्कालीन शूरवीर युद्धक्षेत्र में शौर्य एवं पराक्रम दिखाया करते थे। मुगलों के अत्याचारों से संत्रस्त हिन्दूजनता तुलसीदास की कविता से सांस्कृतिक संदेश व सम्बल पाती थी। रीतिकाल में भी बिहारी जैसे बहुश्रुत कवि ने राजा जय सिंह की अंधी आँखों को दृष्टि प्रदान की थी। भूषण के छन्दों के प्रभाव से शिवाजी की तलवार झंकृत हो उठी थी। सौन्दर्य-सम्पन्न कवयित्री प्रवीन राय ने भी अपनी निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के द्वारा अकबर जैसे कामुक और लम्पट बादशह से अपने शील व स्वतन्त्रता की रक्षा की थी-

बिनति राय परवीन की, सुनियो साह सुजान।
जूठी पातर भखत है, बारि बायस स्वान।।

भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने वाले अनेक अग्रणी नेताओं ने साहित्य लेखन द्वारा भारतीय जनता में देश-प्रेम के भाव जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने 'गीता-रहस्य', विनायक दामोदर सावरकर ने 'The Indian War of Independence', पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने 'Discovery of India' तथा रामधारी सिंह दिनकर ने '**संस्कृति के चार अध्याय**' नामक पुस्तकें लिखकर भारतीय मानस में राष्ट्र-गौरव व राष्ट्र-मुक्ति के भावों को पुष्ट किया।

आधुनिक काल में बंगला साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास '**आनन्दमठ**' में निहित 'वन्दे मातरम्' गीत ने जहाँ भारतीय नवयुवकों में स्वतन्त्रता-प्राप्ति का अदम्य उन्माद कर दिया, वहाँ रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित '**जन गन मन**' गीत ने उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार किया। तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती ने भी राष्ट्रीय एकत्व की भावना से ओत-प्रोत साहित्य की रचना कर भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन को दूर तक प्रभावित किया। श्यामलाल गुप्ता 'पार्षद' द्वारा मार्च, १९२४ में लिखित झंडा-गीत '**विजयी विश्व तिरंगा प्यारा**' जन-जन में इतना प्रिय हुआ कि इस एक गीत ने ही भारत में स्वतन्त्रता के आकांक्षी अनेक क्रांतिकारी उत्पन्न कर दिये। लखनऊ के निकट ९ अगस्त, १९२५ को घटित काकोरी-कांड के शहीदों (रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खाँ और रोशन सिंह) ने भी राष्ट्र-प्रेम से परिपूर्ण कविताएँ लिखकर नवयुवकों को स्वतन्त्रता-पथ पर अग्रसर किया। रामप्रसाद बिस्मिल के गीत- '**सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।**' तथा रोशन सिंह की अग्रलिखित काव्य-पंक्तियों ने लोगों में स्वतन्त्रता-वेदी पर न्योछावर होने का भव्य भाव